महाभारत में धर्म का महत्व

डॉ. बिंदू राजपूत

संस्कृत विभाग, एस.आर.के. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फ़िरोज़ाबाद

सार

महाभारत में धर्म का महत्व सबसे केंद्रीय और सर्वोपरि है, क्योंकि यह महाकाव्य संपूर्ण रूप से धर्म, कर्म और न्याय के संघर्ष की गाथा है। [1, 2]

महाभारत में धर्म का अर्थ और महत्व

- ब्रह्मांडीय व्यवस्था: महाभारत के अनुसार धर्म केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि सत्य, करुणा, न्याय, संयम और अपने कर्तव्यों का सही निर्वाह है। [1, 2]
- धर्मो रक्षति रक्षितः: ग्रंथ का यह संदेश है कि जो व्यक्ति या समाज धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। [1, 2]
- यतो धर्मस्ततो जयः: महाभारत का अंतिम और सबसे बड़ा उपदेश है कि जहाँ धर्म होता है, वहीं विजय होती है। अधर्म चाहे कितना भी शक्तिशाली क्यों न लगे, उसका पतन निश्चित है। [1, 2]
- संकट और कर्तव्य: पांडव और कौरवों का युद्ध इसी बात का प्रतीक है कि परिवार या मोह से ऊपर उठकर अपने नैतिक कर्तव्य (धर्म) का पालन करना ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। [1, 2]

परिचय

महाभारत' में थोड़ा दुर्योधन के सेनापतियों के नाम पर ध्यान दीजिए उसके प्रथम सेनापति थे भीष्म। जब वे थके, तो द्रोणाचार्य। द्रोणाचार्य के बाद कर्ण और कर्ण के पश्चात् शल्य। ये चारों जो एक के बाद एक दुर्योधन के सेनापति बने, कितने महान व्यक्ति थे। बाल ब्रह्मचारी भीष्म, महान तपस्वी शस्त्रविद् द्रोणाचार्य, महान् दानी कर्ण और महान पुण्याभिमानी शल्य। तो ब्रह्मचर्य, तप, दान और पुण्याभिमानी -- ये चार सेनापति हैं दुर्योधन के। और वे चारों मारे गए। ऐसा क्यों? दुर्योधन के वक्त उक्त चारों सेनापतियों को विचार करना था कि हम किसका साथ दे रहे हैं? दुर्योधन अधर्म का प्रतीक है और उसके ब्रह्मचर्य, तप, दान और पुण्याभिमान ये चार सेनापति उस अधर्म को जिताने के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं! अब यह सोचने की बात है कि ब्रह्मचर्य, तप, दान और पुण्याभिमान का संरक्षण प्राप्त करने से अधर्म अमर हो जाएगा अथवा अधर्म का साथ देने के कारण ब्रह्मचर्य, तप, दान और पुण्याभिमान मारे जाएँगे? दुर्योधन पहले तर्क को मानता था, वह सोचता था कि धर्म का संरक्षण पाकर वह अमर हो जाएगा।[1,2,3]

क्योंकि भीष्म को वरदान था कि वे जब चाहेंगे तभी मरेंगे। इसलिए दुर्योधन ने सोचा कि हमारा सेनापति कैसा बढ़िया है, जो इच्छामृत्यु है, जो किसी के मारने से नहीं मरेगा।

और द्रोणाचार्य कैसे हैं? वे मृत्यु को तब प्राप्त होंगे, जब शस्त्र का त्याग कर देंगे। शस्त्र का त्याग भी तभी करेंगे, जब उनके पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु होगी। और अश्वत्थामा तो कभी मरेंगे ही नहीं क्योंकि वे अमर हैं, इसलिए द्रोणाचार्य भी अमर रहेंगे। कर्ण तो अमर हैं ही क्योंकि कवच कुण्डल के साथ उनका जन्म हुआ है, और जब तक उनके कवच-कुण्डल सुरक्षित हैं, उन्हें कोई मार नहीं सकता। अब रहे शल्य। शल्य को श्रीकृष्ण की बराबरी का ही सारथि माना गया। तो, जैसे श्रीकृष्ण अमर हैं, उसी प्रकार उन्हीं के समान कुशल सारथि होने के कारण शल्य को भी दुर्योधन ने अमर मान लिया। पर अन्ततोगत्वा दुर्योधन का सारा गणित धरा रह गया। जिन चारों सेनापतियों को उसने अमर माना था, वे सब के सब मारे गए। 'इस पर प्रश्न उठता है कि धर्म अमर है या मृत्यु? इसका उत्तर है कि धर्म तो अमर ही है, पर जो धर्म-अधर्म को अमर बनाने के लिए सचेष्ट हो, वह धर्म है क्या? यही प्रश्न है।'

कौरव पक्ष के भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य सभी मारे जाते हैं। अन्त में जब अकेला दुर्योधन बचा रहता है, तो गान्धारी उससे कहती है -- पुत्र, सब तो मारे गए, पर मैं तुम्हें नहीं मरने दूंगी। जब गान्धारी का धतराष्ट्र से विवाह हुआ तो गान्धारी ने निश्चय किया कि यदि मेरे पति देव अन्धे हैं, तो फिर मैं भी अपनी दृष्टि का उपयोग नहीं करूंगी। इसलिए उसने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली, लोगों ने कहा "धन्य है गान्धारी जिसने, आँखों के रहते हुए भी उन पर पट्टी बाँध कर पतिव्रत का पालन किया" [4,5,6]

गान्धारी वास्तव में मूर्तिमय ममता है। केवल गान्धारी ही पट्टी नहीं बाधती, अपितु हम जितने भी ममता वाले हैं सबके सब अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे हुए हैं। वे कहते हैं कि चाहे जो कुछ भी हो लेकिन हमें अपने प्रियजनों की विकृतियों के बारे में कुछ नहीं देखना है | धृतराष्ट्र और गान्धारी का पक्ष यह है कि दुर्योधन, दुःशासन और हमारे सौ बेटे चाहे कितने भी बुरे क्यों न हों, पर हैं तो हमारे बेटे और यह केवल महाभारत का ही सत्य नहीं है बल्कि सत्य तो हमारे और आपके जीवन का भी है। हमने निर्णय लिया है कि हमारा बेटा बुरा भी है, तब भी हम आँखों पर पट्टी बाँधे रहेंगे, उसकी बुराई पर दृष्टि नहीं डालेंगे। गीता में भगवान श्रीकृष्ण का पक्ष यह है कि जहां पर विकृति है वहां पर कोई भी सम्बन्ध क्यों न हो उसे तो नष्ट कर ही देना चाहिए। क्योंकि विकृति तो विकृति ही है।

गान्धारी के मन में गर्व है कि मैं तो पतिव्रता हूँ। मैं अपने पुत्र को मरने नहीं दूंगी। यही मोह है। मोह कितना बलवान् है! सती गांधारी इसी मोह के आक्रमण से नहीं बचीं। उनको विश्वास हो गया कि वे अपने पतिव्रत्य के बल पर दुर्योधन को मरने से बचा लेंगी।

गान्धारी भी अपने धर्म के द्वारा यही करना चाहती हैं, जो संसार में कभी नहीं हुआ। वे दुर्योधन से कहती हैं - बेटा, तू नग्न होकर मेरे सामने आ जाना, मैं अपनी आँखों से पट्टी खोलकर तुझे अमर बना दूंगी। दुर्योधन तो आनन्द में डूब गया। पर जब यह समाचार पाण्डवों के खेमे में पहुँचा, तो वहां मायूसी छा गयी। सोचने लगे कि जब गान्धारी जैसी पतिव्रता ने ऐसा व्रत ले लिया है, तब क्या होगा? पर श्रीकृष्ण मुस्कराकर व दुर्योधन नग्न होना जानता होता और गान्धारी आँखों की पटटी खोलना जानती होती, तो यह अनर्थ ही क्यों होता? दुर्योधन नग्न होना कहां से जाने वह तो दूसरों को नग्न करना जानता है। उसने द्रौपदी को नग्न करने की चेष्टा की इसी से महाभारत की लड़ाई हुई। स्वयं नग्न होने का तात्पर्य है अपने दोष देखना और उसे स्वच्छ करने की चेष्टा करना तथा दूसरों को नग्न करने का अर्थ है दूसरे का दोष देखना दूसरेको नीचा दिखाने की चेष्टा करना। दुर्योधन में आत्मदोष-दर्शन की प्रवृत्ति ही नहीं है वह केवल परदोष दर्शन ही करता है। अतः वह नग्न कैसे हो सकेगा? उधर गान्धारी पतिव्रता तो हैं, पर उन्हें आँखों की पट्टी को खोलना कहां आता है? यह सही है कि उनकी आँखों में ऐसी शक्ति है कि चाहें तो वे किसी को भस्म कर दें और चाहें तो किसी के शरीर को वज्र बना दें। पर वे आँखों को खोलना जाने तब न? यदि जानती होती, तो जिस समय भरी सभा में दुर्योधन द्रौपदी को नग्न करवा रहा था, वे धमकी दे सकती थीं कि दर्योधन, यदि तुम ऐसा अन्याय करोगे, तो मैं आँखों की पट्टी खोल तुम्हें भस्म कर दूंगी। उससे सारा पाप ही समाप्त हो जाता। पर यह कैसी विडम्बना है कि गान्धारी पाप को अमर बनाने के लिए आँखों की पट्टी खोलने का व्रत लेती हैं! अपने पतिव्रत्य के बल पर उसे अमर बनाने पर तुली हुई हैं, जो दूसरों के पतिव्रत्य को नष्ट करने पर तुला रहता है!! पर क्या वे अपनी इच्छा में सफल हो पाई?

विचार-विमर्श

धर्म के साक्षात धनीभूत रूप श्रीकृष्ण के रहते क्या अधर्म अमर बन सकता था? विजय तो धर्म की ही होनी थी। 'महाभारत' घोषणा करता है — 'यतो धर्मस्ततो जय'। दुर्योधन भी सोचता था कि जीत उसकी होगी, क्योंकि ब्रह्मचर्य, तप, दान, पुण्य और पतिव्रत्यरूप धर्म उसी की तरफ है। पर 'महाभारत' में एक वाक्य और कह दिया गया — 'यतः कृष्णस्ततो धर्मः - जिधर कृष्ण हैं, उधर धर्म है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जिधर कृष्ण, उधर धर्म और जिधर धर्म, उधर विजय। पर विजय तो कौरव पक्ष की ओर दिखाई पड़ रही है - दुर्योधन नग्न होकर अपनी माता गान्धारी के पास अमर बनने के लिए जा रहा है। पर क्या गान्धारी दुर्योधन को अमर बना पाई? हम पढ़ते हैं कि श्रीकृष्ण की प्रेरणा से नारद दुर्योधन के सामने आ जाते हैं जब वह सारे खिड़की-दरवाजों को बन्द कर नग्न होकर अपनी माँ के पास सावधानी से जा रहा है कि कहीं कोई उसे देख न ले। जब वह नारद को देखता है तो लजाकर बैठ जाता है। अब, सन्त के सामने कहां उसे अपना दोष प्रकट करना चाहिए था और कहाँ लजाकर छिपने की चेष्टा करता है। नारद मुस्करा पड़े! बोले - भलेमानुस, जब मेरे सामने इतना संकोच कर रहे हो, तब माँ के सामने क्या होगा, कुछ तो कपड़ा पहन लो, थोड़ा अपने गुप्त अंगो को ढक तो लो। क्या

बढ़िया सलाह है, यह एक व्यवहारिक सलाह है ____ कुछ ढंक लेना और कुछ प्रकट करना। नारद की ऐसी सलाह दुर्योधन के स्वभाव के अनुकूल ही थी। और दुर्योधन ही क्यों, वह हम सबकी प्रवृत्ति के अनुकूल बात है। तो, जब दुर्योधन कमर में कपड़ा लपेटकर माँ के पास पहुँचा, माँ ने आँखो की पट्टी खोलकर उसकी ओर देख लिया। दुर्योधन का सारा शरीर वज्र हो गया, केवल कमर ही जिस पर कपड़ा लिपटा था, दुर्बल रह गई। श्रीकृष्ण ने मुस्कराकर कहा – देखो, पतिव्रता ने अधर्म को अमर बनाना चाहा, पर अधर्म तो अमर हुआ नहीं, बल्कि पतिव्रता ने अधर्म के मरने का उपाय जरूर बता दिया। पहले तो सोचना पड़ता कि दुर्योधन को मारने के लिए उसपर कहाँ वार किया जाय, पर अब तो पता चल गया कि कमर पर ही वार करना होगा।[7,8,9]

तो, हमारा ब्रह्मचर्य, हमारा तप, हमारा दान, और हमारा पूण्य यदि केवल मोह और अहंकार की सृष्टि के लिए हो, तो वह धर्म नहीं, अधर्म है और ऐसे अधर्म का शीघ्र नष्ट होना ही उचित है। रामायण में भी हम यही बात देखते हैं। बिभीषण की तपस्या, उनकी साधना रावण को ही बल प्रदान करती थी। जब तक उन्होंने रावण और कुम्भकरण से नाता तोड़कर हनुमानजी के साथ नाता नहीं जोड़ लिया, तब तक उनका धर्म अधर्म को ही पुष्ट करता था। धर्म की कसौटी यह है कि जीवन में वैराग्य आना चाहिए -- 'धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना' (3/15/1)। धर्म से जब वैराग्य आए, तो समझ लीजिए हनुमानजी आ गए। और यदि करते करते मोह और अहंकार आए, तब समझ लेना चाहिए कि वह धर्म नहीं घोर अधर्म है।

परिणाम

1 धर्म के जितने भी अंग हैं जैसे ब्रहाचर्य, दान, तप, पुण्य, पतिव्रतता आदि–आदि अधर्म का साथ देने के कारण ये धर्म नहीं बल्कि घोर अधर्म ही हैं। किसी भी परिस्थिति में अधर्म का साथ देना पाप है।

2. जब दुर्योधन द्रौपदी को नग्न करना चाह रहा था तो गान्धारी को कहना चाहिए था कि यदि उसने ऐसा किया तो वह अपनी आँखों की पट्टी खोलकर उसे भस्म कर देगी। श्रीकृष्ण भगवान का यह उपदेश कि जहाँ पर विकृति है वहाँ काई भी सम्बन्ध क्यों न हो उसे नष्ट कर देना चाहिये, यथार्थ है। हम भी अपनी संतान के दोषों की अनदेखी न करें व उन दोषों का विनाश करने का प्रयत्न करें।

3. दुर्योधन के शरीर को वज्र अथवा अमर बनाने की चेष्टा गान्धारी का त्रुटिपूर्ण प्रयास था। उसने पतिव्रत घर्म का दुरुपयोग करने की चेष्टा की। हमें भी धर्म से प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए। धर्म के हित में उपयोग करना चाहिये।[10,11,12]

4. दुर्योधन दूसरों को नंगा करना जानता था उसे स्वयं नंगा होना नहीं आता था। हम का दूसरों के दोषों को न देखकर अपने दोषों का आत्म निरीक्षण करें एवं उन्हें दूर करने की चेष्टा करें।

महाभारत में धर्म और कर्म का वास्तविक अर्थ

महाभारत केवल एक ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन की नैतिक दिशा तय करने वाला आध्यात्मिक मार्गदर्शक है। इसमें धर्म और कर्म की अवधारणाएँ अत्यंत गहराई से समझाई गई हैं। अधिकांश लोग धर्म को केवल धार्मिक नियमों तक सीमित मानते हैं और कर्म को केवल कार्य समझते हैं, जबकि महाभारत इन दोनों को जीवन की आत्मा के रूप में प्रस्तुत करता है। जो पाठक इन गूढ़ सिद्धांतों को सही दृष्टिकोण से समझना चाहते हैं, उनके लिए प्रामाणिक महाभारत हिंदी संस्करण का अध्ययन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है, क्योंकि इसमें मूल श्लोकों की प्रमाणिक व्याख्या उपलब्ध होती है।

धर्म का वास्तविक अर्थ

महाभारत के अनुसार धर्म केवल पूजा-पाठ या सामाजिक नियमों का पालन नहीं है, बल्कि सत्य, करुणा, न्याय, संयम और उत्तरदायित्व का संतुलन है। धर्म वह शक्ति है जो समाज को स्थिर रखती है और व्यक्ति को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। युधिष्ठिर का जीवन धर्मपालन का श्रेष्ठ उदाहरण है, जहाँ उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी सत्य और न्याय का मार्ग नहीं छोड़ा।

धर्म स्थिर नहीं होता, बल्कि परिस्थिति के अनुसार विवेकपूर्ण निर्णय लेना ही सच्चा धर्म है। यही कारण है कि महाभारत में कई बार पात्रों को कठिन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

कर्म का गूढ़ सिद्धांत

कर्म का अर्थ केवल कार्य करना नहीं, बल्कि उस कार्य के पीछे की भावना और उद्देश्य भी महत्वपूर्ण होते हैं। महाभारत में कर्मफल सिद्धांत स्पष्ट करता है कि प्रत्येक कर्म का परिणाम निश्चित होता है। व्यक्ति अपने कर्मों से अपना भविष्य स्वयं निर्मित करता है।[16,17,18,19]

भगवद गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को निष्काम कर्म का उपदेश देते हैं। इसका अर्थ है कि कर्म करते समय फल की आसक्ति त्याग दी जाए और केवल कर्तव्य भावना से कार्य किया जाए।

धर्म और कर्म का संतुलन

महाभारत यह सिखाता है कि केवल कर्म करने से सफलता नहीं मिलती, बल्कि कर्म का मार्ग धर्म से जुड़ा होना चाहिए। यदि कर्म अधर्म के मार्ग पर किया जाए तो उसका परिणाम विनाशकारी होता है, जैसा कि दुर्योधन के जीवन में देखने को मिलता है।

धर्म और कर्म का संतुलन व्यक्ति को आत्मिक शांति, सामाजिक सम्मान और दीर्घकालिक सफलता प्रदान करता है।

आधुनिक जीवन में उपयोगिता[13,14,15]

आज के प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में लोग सफलता के लिए नैतिक मूल्यों से समझौता कर लेते हैं। महाभारत हमें सिखाता है कि स्थायी सफलता वही है जो धर्म के आधार पर अर्जित की जाए। सही कर्म और सही निर्णय व्यक्ति को मानसिक शांति और संतोष प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष

महाभारत में कृष्ण को अक्सर धर्म के रक्षक के रूप में देखा जाता है। वे द्रौपदी के अपमान के समय उनकी रक्षा करते हैं, अभिमन्यु की अन्यायपूर्ण मृत्यु का न्याय सुनिश्चित करते हैं और पांडवों को उनका उचित स्थान वापस दिलाने में सहायता करते हैं। फिर भी, एकलव्य, जो एक निष्ठावान, स्वयंशिक्षित धनुर्धर था, जिसने गहन आदर और अनुशासन दिखाया, उसे सीखने और अभ्यास करने का अवसर नहीं दिया गया और उससे अपने कौशल और ज्ञान का त्याग करने को कहा गया। और कोई भी दैवीय या नैतिक शक्ति हस्तक्षेप नहीं करती।[20]

संदर्भ

1. "How did the 'Ramayana' and 'Mahabharata' come to be (and what has 'dharma' got to do with it)?". मूल से से 16 दिसम्बर 2018 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः 16 दिसम्बर 2018.
2. सिंह, राजेन्द्र प्रताप. १००० महाभारत प्रश्नोत्तरी. दिल्लीः सत्साहित्य प्रकाशन. pp. १६४. आईएसबीएनः 81-7721-041-6. मूल से (सजिल्द) से 13 अगस्त 2010 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः 1 मई 2010. महाभारत को 'पंचम वेद' कहा गया है। यह ग्रंथ हमारे देश के मन-प्राण में बसा हुआ है। यह भारत की राष्ट्रीय गाथा है। इस ग्रन्थ में तत्कालीन भारत (आर्यावर्त) का समग्र इतिहास वर्णित है। अपने आदर्श स्त्री-पुरुषों के चरित्रों से हमारे देश के जन-जीवन को यह प्रभावित करता रहा है।
3. "हिन्दुपिडिया-महाभारत". मूल से से 5 जनवरी 2010 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः 4 अप्रैल 2010.

4. स्पोडेक, होवार्ड. रिचर्ड मेसन. विश्धा का इतिहास.पिअर्सन एजुकेशनः२००६, नयु जर्सी. २२४, 0-13-177318-6
5. अमर्तय सेन, द आर्ग्युमेनटिव इण्डियन . रायटिंग्स आन इण्डियन कल्चर, हिस्टरी एण्ड आईडेन्टिटी, लन्दनः पेन्गुइन बुकस,2005
6. Austin, Christopher R. (2019). Pradyumna: Lover, Magician, and Son of the Avatara (अंग्रेज़ी भाषा में). Oxford University Press. p. 21. ISBN 978-0-19-005411-3.
7. Brockington (1998, p. 26)
8. "How did the 'Ramayana' and 'Mahabharata' come to be (and what has 'dharma' got to do with it)?". मूल से से 16 दिसम्बर 2018 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः 16 दिसम्बर 2018.
9. Van Buitenen; The Mahabharata – १; The Book of the Beginning. Introduction (Authorship and Date)
10. भारत का अर्थ है भरत की संतान, जो कि महान जैन राजा थे जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने भारतवर्ष साम्राज्य की स्थापना की थी।
11. महाभारत–गीताप्रेस गोरखपुर, आदि पर्व अध्याय १, श्लोक ६२–७०
12. "The Mahabharata: How an oral narrative of the bards became a text of the Brahmins". मूल से से 15 अप्रैल 2018 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः 24 अप्रैल 2018.
13. राजवद् रुप्वेषौ ते ब्राह्मी वाचं विभर्षि चको नाम त्वं कुत च असि कस्य पुत्र च शंस मे॥(महाभारत आदिपर्व ८१/१३)
14. रामायण–महाभारतः काल, इतिहास, सिद्धान्त–लेखक वासुदेव पोद्दार
15. "Experts dig up 950BC as epic war date". 16 सितंबर 2017 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथिः 16 सितंबर 2017.
16. "द महाभारत–ए क्रिटिजम, सी.वी. वेदया, पेज–७१". 25 सितंबर 2014 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथिः 21 जून 2010.
17. "महाभारत और सरस्वती सिंधु सभ्यता लेखक–सुभाष कक" (PDF). मूल से (PDF) से 18 मई 2012 को पुरालेखित।. अभिगमन तिथिः 9 अप्रैल 2010.
18. रामायण–महाभारतः काल, इतिहास, सिद्धान्त–लेखक वासुदेव पोद्दार Archived 2014-09-22 at the वेबैक मशीन, पेज–२०९
19. "द महाभारत–ए क्रिटिजम, सी.वी. वेदया, पेज–६". 25 सितंबर 2014 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथिः 21 जून 2010.
20. "द महाभारत–ए क्रिटिजम, सी.वी. वेदया, पेज–१४". 25 सितंबर 2014 को मूल से पुरालेखित. अभिगमन तिथिः 21 जून 2010.